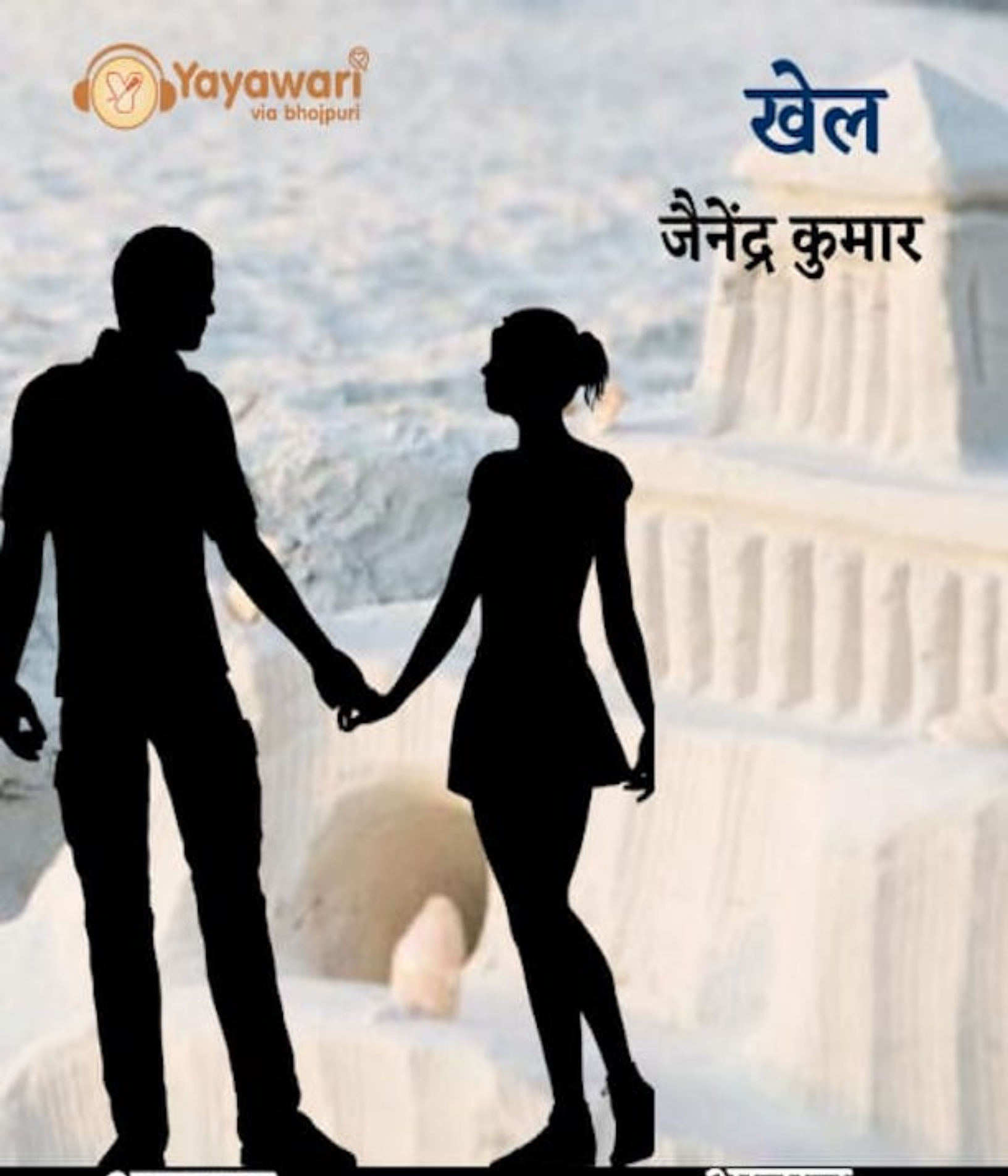

खेल

जैनेंद्र कुमार

अनुवाद
सुधीर कुमार मिश्रा

आवाज
प्रतिमा योगी

खेल

कहानी

लेखक-जैनेन्द्र कुमार

अनुवादक –सुधीर कुमार मिश्र

"ईश्वर बृज" फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2023

गूंगी सधले सांझ कम परकास में गते-गते हंसत रहे । ओही बेरी गंगा जी के एकदम सुनसान परल बालू के परती प एगो लइका अउरी एगो लइकी अपना के आ पूरा संसार के भुला के ,गंगा जी के ओह तट प बालू अउरी पानी के आपन बीएस एगो संघतिया बना के , ओकरा से खेलत रहले स।

प्रकृति एह निरदोष परमात्मा के भाग के एकडीएम सुन्न हो के आ एक टके देखत रहे । लइका के केनोयो से एगो लकड़ी मिल गईल रहे उ ओही से घाट के पानी के उछालत रहे जइसे की नाई वाला मल्हाह नाई के चलावे खातिर चप्पू से पानी के उछाले ले स । बुझाये जे पानी लड़िका से घाव खाइयो के ओकरा से सन्घतियाव कइल चाहत रहे ।लइकी अपना एगो गोड़ प बालू में गाड़ के ओकरा प बालू के अउरी गला कईके अउरी ओकरा के हाथन से थाप-थाप के एगो भाड़ बनावत रहे ।

“बनावत-बनावत लइकी भाड़ से बोलल देख ,” जे ठीक से ना बनब नु , त हम तोहरा के तुर देब ।” फेरु बड़ा पियार से ओकरा के थापे लागल आ ओकरा से एगो सुनर रूप देबे के कोसिस करे लागल । बनावत घरिये उ सोंचत जात बीया –एकरा उपर हम एगो पलानी लगाइब – उ पलानी हमार रही । अउरी मनोहर ?.....ना , उ एह पलानी में ना रही , बहरी ठाड़ रही आ भाड़ में पतई झोंकी । जब उ हार जाई निहोरा करत-करत , तब हम ओकरा के एह पलानी में भीतरी बोलाइब ।